International Journal of Applied Research 2017; 3(11): 316-317

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(11): 316-317
www.allresearchjournal.com
Received: 19-09-2017
Accepted: 21-10-2017

स्मिता कुमारी
शोधार्थी, ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
स्मिता कुमारी
शोधार्थी, ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

सेवासदन : स्त्री मुक्ति का भारतीय पाठ

स्मिता कुमारी

सारांश
प्रेमचंद के सेवासदन उपन्यास में दहेज–प्रथा, अनमेल–विवाह, नारियों के प्रति दृष्टिकोण आदि को कथावस्तु मनाया है। सुमन के माध्यम से लेखक ने स्त्रित्व की गरिमा को बखूबी दिखाने का प्रयास किया है। नारियाँ अब चार–दीवारी में कैद रहने वाली नहीं है, उसे तो खुली छत और अनन्त आकाश चाहिए। जिसमें वह मन की व्यथा और तन की प्यास बुझा सके।

प्रस्तावना
प्रेमचंद ने सेवासदन उपन्यास के माध्यम से स्त्रियों के दारुण, नारकीय, अमानवीय अवस्था आदि का वर्णन बहुत ही अनुपम रूप में प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास के प्रकाशन का सौ वर्ष से अधिक हो चुका है, लेकिन आज भी असंख्य 'सुमन' पति को छोड़कर देह व्यापार को अपनाने के लिए अभिशप्त है। कहना न होगा इसके लिए लैंगिक पूर्वाग्रह, पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण, सामन्ती मानसिकता आदि जिम्मेदार हैं। तथाकथित लोग वर्तमान में भी स्त्रियों को सिर्फ और सिर्फ भोग की वस्तु से ज्यादा तव्वजो नहीं देते हैं। जिसके परिणामस्वरूप स्त्रियाँ विद्रोह की विगूल फूँकती है और उन्हें कुलटा, चरित्रहीन, रंडी, वेश्या, पतुरिया, बेहाया, बदचलन आदि जैसे अलंकरण से नवाजा जाता है। यह पुरुषवादी मानसिकता का द्योतक नहीं है तो और क्या है?
बहरहाल प्रेमचंद ने सेवासदन में स्त्रियों की भयावह जीवन गाथा को कथावस्तु बनाया है। दहेज प्रथा जैसी सड़ांध सामाजिक व्यवस्था के कारण 'सुमन' की जीवन कहाँ से कहाँ पहुँच जाती है। इसाई लेडी से शिक्षा प्राप्त सुमन को कोठा पर शरण लेनी पड़ती है। लोग दहेज लेना सम्मान समझते हैं। प्रेमचंद ने लिखा है–
''मैंने लड़के तो पाला है, सहस्रों रुपए उसकी पढ़ाई में खर्च किए हैं। आपकी लड़की को इससे उतना ही लाभ होगा, जितना मेरे लड़के को। तो आप ही न्याय कीजिए कि यह सारा भार मैं अकेला कैसे उठा सकता हूँ।''(1)
प्रेमचंद ने लड़कियों को सामाजिक स्थिति पर कड़ा व्यंग्य किया हे। मानो ये स्त्रियाँ, लड़कियाँ मानव नहीं, वरन् बाजार मंडी की चीज है। 'सुमन' के लिए वर की तलाश में उमानाथ जब किसी गाँव पहुँचते हैं, तो कैसी दृश्य उत्पन्न हो जाती है– ''ज्यों ही वह किसी गाँव में पहुँचते, वहाँ हलचल मच जाती। युवक गठरियों से वह कपड़े निकालते, जिन्हें वह बारातों में पहना करते थे। अँगूठियों और मोहनमाले मंगनी माँगकर पहन लेते। माताएँ अपने बालकों को नहला–धुलाकर आँखों में काजल लगा देती और धुले हुए कपड़े पहनाकर खेलने भेजती। विवाह के इच्छुक बूढ़े नाइयों से मोंछ कटवाते और पके हुए बाल चुनवाने लगते। गाँव के नाई और कहार खेतों से बुला लिए जाते, कोई अपना बड़प्पन दिखाने के लिए उनसे पैर दबवाता, कोई धोती छटवाता। जब तक उमानाथ वहाँ रहते स्त्रियाँ घरों से न निकलतीं कोई अपने हाथ से पानी न भरता, कोई खेत में न जाता।''(2)
दरअसल हास्य–व्यंग्य के माध्यम प्रेमचंद ने सांमती संस्कारों को बेनकाब किया है। झूठी शान और झूठी मान के लिए पुरुषवादी मानसिकता से ग्रसित लोगों ने स्त्रियों को बाजार में लाकर खड़ा कर दिया। इनके काले करतुतों से असंख्य सुमन कोठा सजाने को अभिशप्त होती है। रामविलास शर्मा ने लिखा है– ''सामंती संस्कारों का कैसा अनुपम चित्रण है। रोज खेतों में काम करनेवाले किसान क्यों हल नहीं छूते? पानी भरनेवाली स्त्रियाँ क्यों कुएँ पर नहीं जाती? इसलिए कि इस समाज में ईज्जत उनकी होती है जो अपने हाथ से काम नहीं करते, जिनकी स्त्रियाँ दूसरों से काम कराने में अपना गौरव समझती हूँ।''(3)
मोटे तौर पर सामाजिक संरचना से स्त्रियों का अहित ही हुआ है। सुमन का जिस परिवेश में पालन–पोषण हुआ। ईमानदारी की लकीर पर चलने वाले पिता फरेब में सिद्धहस्त नहीं थे, परिणामस्वरूप गजाधर जैसे गंवार के खूँटे से उन्हें बाँध दिया गया। पति सुमन पर संदेह करने लगता है और सुमन धीरे–धीरे कुंठा का शिकार हो जाती है।

सुमन महसूस करती है, इस समाज में उसी स्त्रियों की इज्जत है, जो अपनी इज्जत बेचती है। सुमन के सामने भोली नाम की वेश्या रहती है। भोली की इज्जत सभी पुरुष किया करते थे। वही लोग जो घर की स्त्रियों को पैर की जूती समझते थे। प्रेमचंद लिखते हैं– ''फिर मौलाना साहब की सवारी आई। उनके चेहरे से प्रतिभा झलक रही थी। वह सजे हुए सिंहासन पर मसनद लगाकर बैठ गए और मौलूद होने लगा।''(4)

कहना न होगा कि यह पुरुष समाज रंगा सियार है। गजाधर स्वयं इस महफिल में जाता था, फिर स्त्री और पुरुष के लिए अलग विधान क्यों? वर्तमान में भी पुरुष–इस मानसिकता के चक्रव्यूह से नहीं निकल पाए हैं। वे स्त्रियों को चार दीवारों में ही रखना चाहते हैं उनके लिए स्त्रियाँ सिर्फ और सिर्फ काम की मशीन भर है। प्रेमचंद ने ऐसे दोहरे चरित्र को बेनकाब किया है– ''तुम्हें तो वहाँ जाते हुए संकोच हुआ होगा? पति उत्तर देता है– ''जब इतने भलेमानुस बैठे थे, तो मुझे क्यों संकोच होने लगा। वह सेठ जी भी आए हुए थे, जिनके यहाँ मैं शाम को काम करने जाया करता हूँ।''(5)

जिस समाज में वेश्याएँ स्वाधीन हों और पुरुष उसे आँखों के पलकों पर रखता हो, उस समाज की भविष्य कैसी होगी, यह सर्वविदित है? इस जर्जर समाजिक व्यवस्था की पोल प्रेमचंद ने खोलकर रख दिया है। सड़ांध सामाजिक–व्यवस्था ने ऐसी–ऐसी प्रतिमान स्थापित किया है, जो तथाकथित सभ्य कहलाने वालों के लिए मुँह पर कालिख पोते जाने के सदृश्य है। क्यों भोली बाई का सम्मान होता है, इसपर गहन–विमर्श के बाद सुमन समझती है। वह स्वतंत्र है और मेरे पैरों में बेड़ियाँ हैं। यह बेड़ियाँ हैं, झूठी मान, मर्यादा और प्रतिष्ठा की। सुमन ने जो अपने अनुभव से पायी थी, वह आज भी प्रासंगिक है। दुष्यन्त कुमार ने इस गजल में कुछ ऐसा ही कहा है–

''कहाँ तो तय था चिरागाँ हर एक घर के लिए
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।''(6)

काशीनाथ सिंह ने स्त्रियों के प्रति लैंगिक पूर्वाग्रह से ग्रसित समाज को आईना दिखाया है। जब पुरुष, 'पर' स्त्री गमन करते तो ठीक, लेकिन स्त्रियों के लिए यह पाबंदियाँ क्यों? उन्होंने ऐसी खोखले, विरोधाभासी, अमान्य, अहितकर, प्रतिलोम, अतिश्योक्ति आदि तथ्यों को खिलदड़े अंदाज में व्यक्त किया है। 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में मीनू के माध्यम से कहा है– ''अगर मुझसे पूछो तो मैं हर पत्नी को एक सलाह दे सकती हूँ। वह अपने पति को अपने से बाहर–घर से बाहर अगर वह पति का प्यार चाहती है तो–घर से बाहर प्रेम करने की छूट दें, उकसाए उसके लिए! क्योंकि वह कहीं और किसी को प्यार करेगा, तो उसके अंदर का कड़वापन, रूखापन भरता रहेगा और इसका लाभ उसकी बीबी को भी मिलेगा। बीबी ही नहीं, बच्चों को भी मिलेगा! समझा?''

और पत्नी भी ऐसा ही करें तो?

''तो जीवन भर नर्क भोगने के लिए तैयार रहे। पति तो पति बच्चे तक माफ नहीं करेंगे इसके लिए!''(7)

बहरहाल सुमन के वेश्या जीवन के कारण उसकी बहन शांता की शादी नहीं हो पाती है। सदन एक ब्राह्मण है, उसे शांता से शादी करना खानदान में दाग लगाने के समान महसूस होता है। उसके पिता बारात वापस लौटा ले जाता है। सुमन गजाधर और पद्मसिंह को छोड़ देती है, लेकिन सदन को उसके हकीकत से रू–ब–रू कराती है। वह सदन से कहती है– ''तुमने उसके साथ यह अत्याचार केवल इसलिए किया कि मैं उसकी बहन हूँ, जिसके कुटिल प्रेम में तुम महीनों मतवाले हुए रहते थे। उस समय भी तुम अपने माँ–बाप के आज्ञाकारी पुत्र थे या कोई और थे? उस समय भी तुम वही उच्चकुल के ब्राह्मण थे या कोई और थे? तब तुम्हारे दुष्कर्मों से खानदान की नाक न कटती थी? आज तुम आकाश के देवता बने फिरते हो। अंधेरे में जूठा खाने को तैयार, पर उजाले में निमंत्रण भी स्वीकार नही।''(8)

दरअसल जिस समाज में स्त्रियाँ घर के बजाय बाजार में इज्जत पाती हो, उस राष्ट्र को उधोगति में जाने से कोई रोक नहीं सकता है। दहेज–प्रथा, अनमेल–विवाह, अशिक्षा आदि ने नारियों की दुर्दशा में महती भूमिका निभाई है। सुमन को इस बिना पर विधवाश्रम छोड़नी पड़ती है, क्योंकि तथाकथित मर्यादा बची रही। समाज के ठेकेदारों ने स्त्रियों के स्वाधीनता की जगह, पराधीनता में ही रखना शान समझा है। स्त्रियों की स्वाधीनता के बिना एक सुन्दर, समृद्ध विकासशील, पारदर्शी आदि लोकतंत्र की कल्पना करना अतिरेक है। प्रेमचंद ने नारी को मनुष्य का दर्जा देने को बखूबी प्रयास किया। उन्होंने बत्तीस करोड़ में से सोलह करोड़ को जानवर के बदले इंसान बनाने के लिए महती योगदन दिया। कहना न होगा कि जिस समाज में स्त्रियाँ सदैव उपेक्षित और अपमानित होती रही हों। जहाँ वह भोग की वस्तु, काम तृप्ति की साधन और विक्रय वस्तु बनी हो, ऐसी परिस्थितियों में उसे वेश्यावृति से कौन रोक सकता है। आवश्यकता है कि स्त्रियों के प्रति पीलियाग्रस्त आँखों की इलाज कराने कि, जिससे किसी और सुमन को कोठा सजाने के नौबत न आवें।

पुरुषवादी मानसिकता के कैदखाने से आज हमारी तथाकथित सामाजिक व्यवस्था आजाद नहीं हुई है। वर्तमान समय में प्रेम करना, पर स्त्रियों के साथ गमन करना और खुले मन से कार्य करना आदि पुरुषों के नैतिक और दैहिक कर्त्तव्य बनकर रह गया है। भारतीय संविधान में निहित मूल कर्त्तव्यों का यह उल्लंघन नहीं तो और क्या है? मधु को कांकरिया ने 'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास में लिखी है– ''हम लड़कियाँ प्रेम नहीं कर सकतीं क्योंकि हमारा प्रेम करना घरवालों के साथ विश्वासघात होगा जिसका परिणाम मुझसे बड़ी बहन एवं आनेवाली स्त्री को भुगतना पड़ेगा। जो खुली हवा सदियों बाद हमारी पीढ़ी को मिली है– उसे अंधड़ कैसे बनने दूँ?''(9)

निष्कर्षतः सामंती समाज के खोखले मूल्य, पितृसत्तात्मक व्यवस्था और लैंगिक पूर्वाग्रह और जातीय विभेद, दहेज अनमेल, बाल–विवाह और सबसे बढ़कर स्त्री देह के पुण्य समझने की संस्कृति ने इन्हें मंडी के समान बना दिया। जिसे लोग अपने सुविधानुसार खरीद सके। गौरतलब है कि अपहरण, यौन हिंसा, अविवाहित मातृत्व की पीड़ा, निर्धनता, परिवार द्वारा त्याग, सामाजिक घरेलू हिंसा ने अनेक स्त्रियों को 'कालिख की कोठरी' में जाने को अभिशप्त किया है। जहाँ से वापस लौटने के सारे रास्ते बंद थे।

''चाहता हूँ कि उसे पूजना छोड़ दू लेकिन
कुफ्र जो खूँ में दीं पर नहीं आने देता।''

संदर्भ ग्रन्थ

1. सेवासदनः प्रेमचंद, भारतीय ग्रंथ निकेतन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण–2006, पृ0–9,
2. सेवासदन : प्रेमचंद, पृ0–17
3. प्रेमचंद और उनका युगः रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, पहला छात्र संस्करण–1993, सातवीं आवृति, 2014, पृ0–33
4. सेवासदनः प्रेमचंद, पृ0– 22
5. सेवासदन : प्रेमचंद, पृ.– 22
6. साये में धूपः दुष्यन्त कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, पहला संस्करण, छियासठवाँ संस्करण–2018, पृ0–13
7. रेहन पर रग्घूः काशीनाथ सिंह,राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण–2010, दूसरी आवृत्ति–2012, पृ0–39
8. सेवासदन : प्रेमचंद, पृ.– 216
9. खुले गगन के लाल सितारे : मधु कांकरिया, पृ.– 42